आत्मा संदेश

के.जे.एजुकेशन सोसायटी

समस्या-समाधान

समस्या- सोयाबीन में तम्बाखू इल्ली हानि पहुंचाती है. उपाय बतलायें.

- शारदा प्रसाद, मुरैना

समाधान- सोयाबीन फसल पर तंबाखू इल्ली का प्रकोप पिछले दो-तीन वर्ष से अधिक आ रहा है. खेतों में कच्ची गोबर की खाद के उपयोग से भी इसका प्रकोप बढ़ने लगता है. इस कीट की सक्रियता अगस्त-सितम्बर में अधिक हो जाती है.जब फसल 40 से 75 दिनों की अवस्था में पहुंच जाती है. इल्ली प्रारंभिक अवस्था में समूह में रहकर पत्तियों के हरे पदार्थ को चूस कर पोषक तत्व के संचार में बाधा डालती है. गुच्छों से अलग होकर जल्द ही पूरी पत्तियों में फैलकर पत्तियों का हरा पदार्थ खाकर सफेद जालीदार लक्षण पैदा कर देती है. समय से निरीक्षण करके निम्न उपचार करें.

- खेत में जगह-जगह घूमकर जालीदार पत्तियां जिसमें इल्ली मौजूद रहती है को तोड़कर पालीथिन बैग में इकट्ठा करके नष्ट करें.
- ट्राईजोफास 40 ई.सी. की 800 मि.ली. अथवा क्विनालफास की 1.5 मि.ली. मात्रा को 800 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें.

किसानों को दी जाने वाली सुविधाएं

खाद्य सुरक्षा मिशन (दलहन)

स्प्रिंकलर, स्प्रेयर पर अनुदान

चयनित जिले 20 -रायसेन, विदिशा, राजगढ़, झाबुआ, उज्जैन, देवास, शाजापुर, गुना, शिवपुरी, दमोह, पन्ना, टीकमगढ़, सागर, छतरपुर, रीवा, सतना, जबलपुर, सिवनी, छिंदवाड़ा, नरसिंहपुर.

1. बीज- दलहनी फसलों के आधार एवं प्रमाणित बीजों का उत्पादन - रु. 1000 प्रति क्विंटल.

प्रमाणित बीजों के वितरण पर सहायता- लागत का 50% या रु.1200 प्रति क्विंटल, जो भी कम हो.

2. समेकित पोषक तत्व प्रबंधन - लागत का 50% या रु. 1250 प्रति हेक्टर जो भी कम हो. अधिकतम रु. 750 चूना एवं जिप्सम के लिये तथा अधिकतम रु. 500 सूक्ष्म तत्वों के लिये.

3. समेकित कीट प्रबंधन (आईपीएम)- लागत का 50% या रु. 750 प्रति हेक्टर जो भी कम हो.

4. स्प्रिंकलर सेटों का वितरण- सभी श्रेणी के कृषकों को लागत का 50% या रु. 7500 प्रति हैक्टर जो भी कम हो. टॉपअप अनुदान 30% या अधिकतम 4,500 रु. जो भी कम हो.

5. एफएफएस प्रतिमान पर किसान प्रशिक्षण- रु.17000 प्रति प्रशिक्षण.

6. नेपसेक स्प्रेयर- रु. 3000 प्रति स्प्रेयर या कीमत का 50 %, जो भी कम हो.

8. मल्टीक्रॉप प्लांटर, सीडड्रिल, जीरो टिलेज, सीडड्रिल - रु. 15000 प्रति यंत्र या कीमत का 50%, जो भी कम हो.

9. सीडड्रिल रोटावेटर- लागत का 50% अथवा रु. 30000 प्रति यंत्र जो भी कम हो.

11. डीजल पंपसेटों के लिये प्रोत्साहन (10 हार्सपावर तक) - लागत का 50% अथवा प्रति पंपसेट रु.10,000 जो भी कम हो.

अल्प वर्षा की स्थिति में नमी संरक्षण के उपाय

कृषि कार्य

- हाथ द्वारा, खुरपी, व्हील हो, हैण्ड हो से खड़ी फसल में कतारों में बोई फसल में गुड़ाई करें जिससे भूमि की ऊपरी परत टूट जाती है तथा नमी संरक्षित रहती है।
- कतार में बोई गई फसलों में कुल्फा/डौरा चलाते रहें एवं खेत से निकाले गये खरपतवारों को कतारों के बीच में खाली जगह में बिछा दें जिससे वाष्पीकरण की क्रिया रूक जायेगी तथा भूमि में नमी संरक्षित रहेगी।
- रबी मौसम के लिये कम पानी चाहने वाली फसलों जैसे मटर, मसूर, चना एवं सरसों की ही बोनी करें।
- समय पर बोनी करें।
- सिंचाई के लिये उपयुक्त सिंचाई विधियाँ उपयोग में लानी चाहिये।

जैविक आदानों का उपयोग - जैविक आदान जैसे गोबर की खाद, केचुआ खाद, नाडेप खाद, कल्चर, गोबर गैस स्लरी खाद का उपयोग करने पर निम्नलिखित लाभ होते हैं -

- मिट्टी को दानेदार बनाता है।
- भूमि की जलधार क्षमता को बढ़ाता है।
- मृदा जल को उड़ने से बचाता है।
- चिकनी मिट्टी को भुरभुरा बनाता है।
- मिट्टी को पोषक तत्वों के साथ-साथ हारमोन्स तथा एण्टीबायोटिक भी प्रदान करता है।
- अमोनिया आयन को अपने साथ बांधकर अमोनिया उर्वरकों के नीक्षालन (लीचिंग) को कम करता है।
- बहुमात्र तत्वों के साथ-साथ यह बहुत सारे सूक्ष्म मात्रिक तत्वों को भी मृदा को प्रदान करते हैं।
- ताजे कार्बनिक पदार्थ सड़ने पर नाइट्रेट, आक्जलेट, टाइट्रेट व लैक्टे पैदा करते हैं लोह तथा एल्यूमिनियम को बांधकर फास्फेट भी बढ़ाते हैं।
- यह सूक्ष्म जीवों के लिये भोजन एवं ऊर्जा प्रदान करता है।
- लाभदायक जीवों (केचुआ का कृतकों) के लिये भोजन प्रदान करता है।

सिंचाई कब की जाये - हमारी फसल को पानी की आवश्यकता को निम्नलिखित विधियों द्वारा ज्ञात किया जा सकता है :-

(अ) पत्तियों का रंग गहरा हो जाता है।

(ब) पत्तियां मुरझाने, सिकुड़ने एवं ऐठने लगती हैं।

(स) पौधों में स्थिति की कमी आती है जिससे पौधे झुक जाते हैं।

(अ) भूमि की दशा एवं गुण देखकर - पौधों की जड़ों के पास की मिट्टी लेकर अंगुलियों से गीली मिट्टी की गोली बना सकते हैं। यदि मिट्टी की गोली नहीं बनती है तो हमारे खेत को जल की आवश्यकता है और सिंचाई का निर्धारण किया जा सकता है।

(ब) क्रांतिक आवस्थाओं को जानकर - सीमित जल को फसलों की क्रांतिक अवस्था पर ही दें।

मल्चिंग (बिछावन/पलवार)- वर्षा का 60 से 75 प्रतिशत पानी भाफ बनकर उड़ जाता है। पानी की ये उड़ावनी, मल्च याने पलवार या बिछावन का प्रयोग कर रोकें। मल्च अधिक अंतरण वाली फसलों जो कि कतारों मे बोई जाती है में आसानी से डाला जा सकता है इसका अवशेष सड़ने पर मृदा भी होता है।

खरपतवार नियंत्रण - खरपतवारों का फसल की पैदावार पर विपरीत असर पड़ता है। खरपतवार पोषक तत्व तथा पानी को भी फसल की अपेक्षा अधिक उपयोग करते हैं। इस प्रकार इन खरपतवारों का समय पर नियंत्रण कृषि यंत्रों के द्वारा किया जाता है। इससे मृदा की ऊपरी सतह टूटती है जिससे पानी का ह्रास मृदा से बहुत कम हो जाता है और मृदा में नमी काफी समय तक संरक्षित रह सकती है इस प्रकार हम कम पानी में भी फसल उगा सकते हैं। जिन मृदाओं में फसल लगी है जैसे - सोयाबीन, उर्द, मूंग, ज्वार, तिलहन, मक्का आदि इन खेतों में फसल कटते ही उसमें नमी होती है इस समय खेत में निंदाई गुड़ाई आसानी से कर नमी को खेत में संरक्षण किया जा सकता है तथा भूमि को खरपतवार रहित बनाया जा सकता है।

पूर्ण पता भेजें

आत्मा संदेश के पाठकों से अनुरोध है कि आपको आत्मा संदेश सुनिश्चित रूप से मिलता रहे इसलिए अपना पूर्ण पता नीचे दिए प्रारूप में हमें भेजें.

नाम ________

पिता का नाम ________

ग्राम ________ पोस्ट ________ पिन ________

जिला ________ फोन ________

कृषक जगत

14, प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल. फोन : 0755-3013605

सुझाव भेजें

आपको हमारा यह अंक कैसा लगा. आत्मा संदेश का यह अंक विशेष रूप से किसान मित्र, किसान दीदी के लिए संजोया गया है. पाठकों से निवेदन है कि कृपया अपने सुझाव हमें इस पते पर लिख भेजिये. आपके सुझावों का इंतजार रहेगा.

समन्वयक
के.जे. एजुकेशन सोसायटी
14, प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल
फोन : 0755-3013605 Email : info@krishakjagat.org

संचालक
किसान कल्याण तथा कृषि विकास
विंध्याचल भवन, भोपाल फोन : 0755-2551336,
फैक्स : 2572468 Email : diagri@mp.gov.in

सम्पादक : संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास, विन्ध्याचल भवन, भोपाल (म.प्र.) फोन : 0755-2551336 एवं समन्वयक- के.जे. एजुकेशन सोसायटी, भोपाल द्वारा आत्मा परियोजना में संयोजित, फोन : 0755-3013605
E-mail : info@krishakjagat.org वि.फी.

नि:शुल्क वितरण के लिये

मध्यप्रदेश शासन

आत्मा संदेश

के.जे.एजुकेशन सोसायटी

किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग म.प्र. की नवोन्मेष प्रस्तुति वर्ष-3 अंक - 9 जुलाई 2010

संचालक की कलम से.............

सोयाबीन की उत्पादकता बढ़ाएं

आप आत्मा संदेश के विशेष अंक का अवलोकन कर रहे हैं इसमें खरीफ फसलों की समग्र जानकारी देने का प्रयास किया गया है। यदि प्रकाशित तकनीक किसान भाई ठीक से अमल करेंगे तो उत्पादकता में निश्चित तौर पर वृद्धि होगी. सोयाबीन, कपास एवं सब्जियों में आने वाली विभिन्न समस्याओं का समाधान किया गया है। किसान भाई अल्प वर्षा की स्थिति में उपलब्ध जल का भरपूर उपयोग करें और कोशिश करें की कम से कम पानी का उपयोग कर ज्यादा से ज्यादा लाभ लिया जा सके. नमी संरक्षण के जो उपाय बताए गए हैं उसका गम्भीरता से अध्ययन कर अमल करें. सोयाबीन ने राज्य के किसानों को विदेशी बाजारों से जोड़ दिया है। सोयाबीन के क्षेत्रफल एवं उत्पादन में मध्यप्रदेश देश में शिखर पर है। मध्यप्रदेश के किसानों की मेहनत ने सभी को चौंकाया है और उनकी प्रशंसा करने पर मजबूर कर दिया है। परंतु हमें लक्ष्य प्राप्ति के लिये और श्रम करना होगा, उन्नत तकनीक, अपनानी होगी। उत्पादकता याने प्रति क्विंटल उपज में हमें आज भी अमेरिका, ब्राजील की तुलना में कहीं अधिक मेहनत करना है। इन्हीं उद्देश्यों को लेकर आत्मा संदेश के इस विशेष अंक में सोयाबीन, कपास फसलों की देखरेख में उन्नत तकनीक पर केंद्रित जानकारी किसान भाईयों तक पहुंचाने का प्रयास किया गया है। इससे जुड़े सभी महत्वपूर्ण आयामों को संजोकर अपने आप में जानकारी एक समृद्ध कोष है। विश्वास है किसान भाई इसका लाभ लेकर फसल उत्पादकता में वृद्धि करेंगे।

आपका
डी.एन. शर्मा
संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास (म.प्र.)

किसानों को सलाह

सोयाबीन के साथ लगायें अंतरवर्तीय फसलें

प्रदेश में सोयाबीन की फसल खरीफ मौसम में सबसे ज्यादा बोई जाने वाली तिलहन फसल है. इसके साथ अंतरवर्ती फसल बोने के अनेक विकल्प हैं. अंतरवर्ती फसल पद्धति में किसी मुख्य फसल के साथ अन्य फसल को कतारों में बोया जाता है. खेती में जोखिम की आशंका को कम करना और अतिरिक्त लाभ हासिल करने के लिये यह पद्धति अपनाई जाना उपयोगी है. अंतरवर्ती फसलों में आपसी साझेदारी होना आवश्यक है, इसलिए ऐसी फसलें साथ बोई जाती हैं जो परोक्ष रूप से भी एक-दूसरी की हितैषी हों. इसके अलावा इनके कुछ गुण समान और कुछ विषम होना भी जरूरी है, जिससे ये मौसम की अलग-अलग परिस्थितियों में भी कम से कम एक फसल तो जरूर मिल ही जाये.

कृषि विशेषज्ञों के अनुसार सोयाबीन के साथ दलहनी फसल के रूप में अरहर बोना सबसे अच्छा विकल्प है. अरहर और सोयाबीन की साथ-साथ खेती से कीट व बीमारी का फैलाव कम होता है, पौधों को बढ़ने के लिये पर्याप्त हवा और प्रकाश मिलता है एवं अरहर की जड़ें जमीन के अंदर गहराई तक जाने के कारण कम वर्षा या अधिक वर्षा दोनों ही परिस्थितियों में उत्पादन दे सकती है. इसके लिये सोयाबीन की चार कतारों के बीच दो कतारों में अरहर बोई जाने की सलाह वैज्ञानिकों द्वारा दी गई है.

अनाज की फसल- ज्वार और मक्का को भी सोयाबीन के साथ अंतरवर्ती फसल के रूप में बोया जा सकता है. इसके लिए इन फसलों की दो-दो कतारों को एक साथ बोया जाना चाहिए. सोयाबीन के साथ तिल को भी इसी प्रकार दो-दो कतारों में लगाया जा सकता है.

अंतरवर्ती फसल के लिये जरूरी नहीं है कि दो ही फसलों को साथ-साथ बोया जाये, इसमें तीन या अधिक फसलें भी सम्मिलित की जा सकती हैं. सोयाबीन, अरहर और मक्का जैसी संयुक्त फसलें बोकर किसान अपनी आवश्यकताओं के लिये उपज प्राप्त कर सकते हैं और बाजार की मांग के अनुरूप फसलोत्पादन कर सकते हैं. किसान कल्याण और कृषि विभाग द्वारा किसानों को अंतरवर्ती फसल लेने के लिये प्रोत्साहित करते हुए अपने मैदानी अमले के माध्यम से फसल तकनीकी का प्रचार-प्रसार किया जा रहा है.

कामयाब किसान

सफलता का आधार बनी योजनाएं

__श्री सुरेश कुमार, पिता श्री बद्रीलाल जाति धाकड़, निवासी ग्राम-सादाखेड़ी, तह.- जावरा, जिला-रतलाम__ इनकी कुल कृषि भूमि 1.644 हे., उम्र 40 वर्ष एवं शिक्षा 8वीं पास मुख्य व्यवसाय कृषि है। परंतु विगत 15 वर्षों से अपने पिता के साथ कड़ी मेहनत से खेती कार्य कर रहा हूँ परंतु आर्थिक स्थिति सुदृढ़ नहीं हो सकी। विगत तीन वर्षों से मैं ग्रा.कृ.वि.अ. श्री जे.एल. पाचाल की सलाह अनुसार मैंने बायोगैस संयंत्र निर्माण करवाया जिससे मुझे गैस के अतिरिक्त जैविक खाद प्राप्त हो रही है। इसके उपयोग करने से फसल उत्पादन में वृद्धि हुई साथ ही लागत व्यय में कमी आयी, इसी प्रकार स्प्रिंकलर योजना का लाभ लेने से कम पानी में अधिक सिंचाई होने से सिंचित क्षेत्र एवं फसल उत्पादन में वृद्धि हुई।

कम लागत अधिक उत्पादन तकनीकी सलाह जैसे- बीज उपचार, कल्चर उपयोग एवं जैविक खाद का उपयोग करने से आज में इस स्थिति में हूँ कि मैंने विगत तीन वर्षों से शुद्ध कृषि आय से खेत पर रहने के लिये पक्का मकान बनाया एवं पूरी कृषि जोत में पाइप लाइन डाली । कृषि विभाग की योजना से मुझे जो लाभ मिला उससे मेरी वर्तमान में आर्थिक स्थिति ठीक है।

__इधर श्यामलाल, पिता- बगदीराम, जाति-पाटीदार, जावरा, जिला-रतलाम (म.प्र.)__ का होकर मेरे पास कुल कृषि भूमि 6.250 हेक्टेयर है मेरी उम्र 38 एवं शिक्षा 6वीं पास मुख्य व्यवसाय कृषि है। परंतु विगत 15 वर्षों से मैं अपने पिता के साथ कड़ी मेहनत से खेती कार्य कर रहा हूँ परंतु मेरी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ नहीं हो सकी। विगत-2 वर्षो से मैं ग्रा.कृ.वि.अ. श्री सुरेश चौहान के सम्पर्क में आने से उनके बताये अनुसार कृषि तकनीकी सलाह एवं योजनाओं का लाभ मिलने से मेरी आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ।

मैंने श्री सुरेन्द्र चौहान की सलाह अनुसार वर्मीकम्पोस्ट पिट का निर्माण करवाया जिससे मुझे फसल उत्पादन में दोगुना फायदा हुआ और रासायनिक खाद की बचत हुई और लागत में कमी आयी।

इस खाद के उपयोग से उत्पादन में वृद्धि हुई और लागत में कमी आयी। साथ ही पिछले वर्ष मैंने श्री सुरेन्द्र चौहान ग्रा.कृ.वि.अ. की सलाह अनुसार अपने खेत में जिप्सम का उपयोग किया, जिससें फसल अच्छी रही और उत्पादन में वृद्धि हुई। कम लागत अधिक उत्पादन तकनीकी सलाह जैसे बीज उपचार कल्चर का उपयोग व ट्रायकोडर्मा का उपयोग करने से आज मैं इस स्थिति में हूँ कि मेरी आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ।

किसान काल सेन्टर फोन नम्बर 18002334433 पर नि: शुल्क फोन करें, खेती की समस्याएं सुलझाएं

आत्मा संदेश पढ़ें, सबको पढ़ाएं

किसान मित्रों और दीदियों,

आपको हर माह आत्मा संदेश मिलेगा. इसके माध्यम से किसान भाई- बहनों को खेती किसानी के आधुनिक तरीकों की जानकारी दी जाएगी. उनका उपयोग कर, उत्पादन बढ़ाकर वे अपनी आय बढ़ा सकते हैं. आत्मा संदेश में प्रकाशित जानकारी का ज्यादा से ज्यादा लाभ उठाने और कृषि तकनीक के प्रति जागरुकता फैलाने की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी आप पर है.

क्या करें.

1. आप शाम की चौपाल में ग्रामवासियों की बैठक को आयोजित कर आत्मा संदेश का सामूहिक वाचन करें.
2. आत्मा संदेश के प्रत्येक अंक की फाईल बनायें और इसे मोटे गत्ते की जिल्द चढ़ाकर सुरक्षित रखें.
3. चौपाल में आत्मा संदेश को सभी के लिए अवलोकनार्थ रखें. इसके बारे में किसानों को भी जानकारी दें.
4. आत्मा संदेश की एक प्रति का प्रदर्शन सार्वजनिक नोटिस बोर्ड पर चस्पा कर किया जा सकता है.

-संपादक

सोयाबीन में अफलन रोग

पहचान-फली का न बनना या विरूप हो जाना. बहुत सारी कलियां बनना व कलियों का गुच्छा बनना. फलों का पत्तियों जैसी संरचनाओं में बदलना. पौधों का देर से सूखना. बीजों का अपक्व फलियों में अंकुरण होना.

रोग आने का उपयुक्त समय- जैसा कि नाम से विदित है इस बीमारी का फसल पर होना फली लगने के समय ही पूर्ण रूप से सुनिश्चित होता है हालांकि बीमारी का संक्रमण पहले ही हो जाता है.

रोकथाम- ऐसे खेतों पर जहां अफलन रोग हर साल उग्र रूप में आता हो वहां संभावित वाहक कीटों की रोकथाम के लिये क्लोरोपाइरीफास 20 ईसी 1.5 लीटर या ट्राइजोफास 40 ईसी 1.5 लीटर या क्विनालफास 25 ईसी 1.5 लीटर या इथोफेनप्राक्स 1 ली. प्रति हेक्टेयर के हिसाब से दो छिड़काव, पहला बुआई के 18 से 20 दिन बाद व दूसरा 28 से 30 दिन बाद करें. अन्य खेतों पर केवल एक छिड़काव इन्हीं में से किसी एक कीटनाशी दवा का बुआई के 28 से 30 दिन बाद करें. ध्यान रहे कि छिड़काव के लिये 800 लीटर घोल का प्रति हेक्टेयर के हिसाब से प्रयोग करें. रोकथाम के लिये और भी अन्य उपाय अपनायें जैसे- बुआई के समय फोरेट 10 जी. से मिट्टी का उपचार, 10 किग्रा. प्रति हेक्टेयर के हिसाब से फसल की आरंभिक अवस्था में लगने वाले संभावित वाहक कीटों के नियंत्रण हेतु अवश्य ही उपयोग लें. रोगग्रसित फसल के बीज को बुआई के काम में न लें क्योंकि वे कम गुणवत्ता वाले व अस्वस्थ होते हैं. अनुशंसित बीज दर 75 से 100 किलो प्रति हेक्टेयर काम में लें क्योंकि अधिक पौध संख्या होने पर रोग के जल्दी उग्र रूप में आने की संभावना होती है.

घातक कीटों से बचाएं कपास

अमेरिकन डेंडू सुंडी -डेंडू छेदक इल्लियां कपास की सबसे खतरनाक दुश्मन मानी जाती है.यह कीट वर्ष भर सक्रिय रहता है. परंतु जुलाई से नवम्बर तक इस कीट का प्रकोप सर्वाधिक होता है.

(क) यांत्रिक नियंत्रण-

- गर्मियों में गहरी जुताई करें.
- खेतों में पक्षियों के टिकान हेतु टी आकार की 40-50 खूटियां प्रति हे. क्षेत्र में प्रयोग करें.
- कीटों को आकर्षित करने हेतु प्रपंची फसलें जैसे भिण्डी, तम्बाखू, गेंदा आदि फसलों का प्रयोग करें.
- बीजाई के 60-70 दिन बाद खेतों में प्रति हे. 3-4 प्रकाश प्रपंच प्रयोग करें.

(ख) जैविक नियंत्रण

- खेत में सूंडी के प्रबंधन हेतु 100 एल ई प्रति एकड़ की दर से पाली हाइड्रोसिस वायरस का प्रयोग करें.
- खड़ी फसल पर 400 ग्रा./एकड़ की दर से बैसिलस थूरिजिएनसिस का छिड़काव करें.
- परजीवी कीट (ट्राइकोग्रामा किलोनिस) 1.5 लाख /हे. की दर से फसल में सुंडी के अंडे दिखने पर 7-10 दिनों के अतंर पर तीन-चार बार छोड़ें.

(ग) रसायनिक नियंत्रण

- अंडा अवस्था के लिये 1.25-1.5 ली. प्रोपेनोफॉस 50 ई.सी.का प्रयोग करें.
- पहली से तीसरी अवस्था के लिये 2 किग्रा. ऐसीफेट 75 डब्ल्यू पी या 2 ली. इथियान 50 ईसी का /हे. की दर से प्रयोग करें.
- चौथी से अंतिम अवस्था के लिये इनामेक्टिन बेनजोएट 225 ग्रा. या 0.625-1 किलो थायोडीकार्ब 75 डब्ल्यूपी या 500-650 मि.ली. इण्डोक्साकार्ब का प्रति हे.की दर से प्रयोग करें.

धब्बेदार या चितकबरी सुंडी- इस कीट की इल्ली अवस्था ही हानिकारक होती है जो कि 10-16 दिन की होती है.

(क) यांत्रिक नियंत्रण-

- खेतों में पक्षी टिकान बनायें.
- बीजाई के 60-70 दिन बाद खेतों में प्रति हे. 3-4 प्रकाश प्रपंच का उपयोग करें.
- प्रति हेक्ट. 15-20 सेक्स फेरोमोन ट्रेप लगायें व ट्रेप फसल के रूप में भिंडी उगानी चाहिए.
- बीजाई के 90 दिनों के अंदर देशी कपास को 10 सेमी तक ऊपर से तुड़ाई करें.

(ख) जैविक नियंत्रण

- अंड परजीवी ट्राइकोग्रामा किलोनस कार्ड को फसलों में प्रयोग करें.
- परभक्षी कीट जैसे क्राइसोपा, मकड़ी, सिरफिड मक्खी आदि का खेतों में संरक्षण करें.
- खड़ी फसल पर 1 कि.ग्रा./ हे. बीटी का छिड़काव करें.

(ग) रसायनिक नियंत्रण-

- अंडा अवस्था 1.25-1.5 लीटर प्रोपेनोफास 50 ई सी या 1.25-1.5 लीटर ट्राइजोफास का प्रति हेक्ट. की दर से छिड़काव करें.
- सुंडी की पहली से तीसरी अवस्था तक-1.5 ली. क्यूनालफास 25 ई.सी. या डेल्टामेथ्रिन 400-500 मि.ली. या 450 मि.ली. अल्फामेथ्रिन/ हेक्टे. की दर से प्रयोग करें.
- सुंडी की चौथी से अंतिम अवस्था तक-400-500 मि.ली. लैम्बडासाय हेलोथ्रिन या 0.625-1 कि.ग्रा. थायोकार्ब या 185 मि.ली. स्पिनोसेड का प्रयोग करें.

गुलाबी या लाल सुंडी- इस कीट के अंडे सफेद रंग के होते हैं. प्रारंभिक अवस्था में इल्ली का रंग सफेद होता है.

(क) यांत्रिक नियंत्रण-

- ट्रेप फसल उगायें, पक्षियों के टिकान भी बनायें.
- कपास की चुनाई के बाद अर्द्धविकसित व खुले टिण्डों को तोड़कर जला दें.
- बीजाई के 60-70 दिनों बाद 3-4 प्रकाश प्रपंच/हैक्टेयर का उपयोग करें.

(ख) जैविक नियंत्रण-

- 250 एलई./हेक्ट. की दर से न्यूक्लियर पालीहाइड्रोसिस वायरस का प्रयोग करें.
- खड़ी फसल पर 1 किग्रा./हेक्ट. की दर से बीटी का छिड़काव करें.
- खेतों में अंडे दिखाई देने पर ट्राइकोग्रामा अंड परजीवी का प्रयोग करें.

(ग) रसायनिक नियंत्रण-

- बीजों का भंडारण के समय एल्युमिनियम फास्फाइड की 1 टिकिया (3 ग्राम) प्रति घनमीटर क्षेत्र की दर से प्रयोग करें.

अंडा अवस्था में -1

- 1.25-1.5 ली. ट्राइजोफास या 1.25 -1.5 ली. प्रोपेनोफास का प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करें.
- पहली से तीसरी अवस्था में डेल्टामेथ्रिन 400-500 मि.ली. या अल्फामेथ्रिन 450 मि.ली. या 1.5 ली. क्विनालफॉस 25 ईसी का प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करें.
- चौथी से अंतिम अवस्था में 0.625-1 किग्रा. थायोडीकार्ब 75 डबल्यूपी या 400-500 मि.ली. लैम्बडासायहेलोथ्रिन 5 ईसी का प्रति हैक्टेयर की दर से प्रयोग करें.

कपास का लाल कीड़ा- यह कीट देशी कपास की अपेक्षा अमेरिकन कपास को अधिक नुकसान पहुंचाता है शिशु व प्रौढ़ दोनों की पत्तियों, तनों, फलों का रस चूसते हैं. पत्तियाँ पीली पड़कर मुरझा जाती हैं. इसके बाद कपास के गोलों पर इनका आक्रमण होता है. जिससे गोलों पर सफेद से पीले धब्बे बन जाते हैं एवं कपास का रंग भी पीला हो जाता है.

नियंत्रण

- गर्मी में गहरी जुताई करें व पक्षियों के बैठने के लिये टी आकार की खूटियाँ गाड़ें.
- 100 ग्राम थायामेथोक्साम 25 डब्ल्यू जी या 450 मिली. लैम्बडासायहेलोथ्रिन 5 ईसी या 250-300 मि.ली अल्फामैथ्रिन 10 ईसी का / हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें

पशुपालन

आपके प्रश्न - डॉक्टर के जवाब

प्रश्न- यदि पशु को चाटने के लिये यूरिया-मोलासिस ब्लॉक दिया जा रहा है तो यूरिया उपचारित भूसे की कितनी मात्रा खिलाना उपयुक्त रहेगा?

उत्तर- इन दोनों में से पशु को एक समय में एक ही देना है। यदि चाटने के लिये ब्लॉक रखा जा रहा है तो उपचारित भूसा न दें और यदि चाटन नहीं दे रहे हैं तो उपचारित भूसा पशु को जितना खाए, दे सकते हैं।

प्रश्न- क्या यूरिया उपचारित भूसा खिलाने पर पशु आहार देने की आवश्यकता नहीं रहती?

उत्तर- यदि पशु दूध में या गाभिन नहीं है और उसे भरपूर यूरिया उपचारित भूसा खाने को मिल रहा है या साधारण भूसे के साथ यूरिया-मोलासिस ब्लॉक चाटने को 24 घंटे उपलब्ध है तो पशु आहार की आवश्यकता नहीं रहती, किंतु गाभिन और दूध देने वाले पशुओं को पशु आहार/बाइपास प्रोटीन दिया जाना आवश्यकता होगा।

प्रश्न- यदि हम पशु को संतुलित पशु-आहार खिला रहे हैं तो भी क्या खजिन मिश्रण अलग से देना आवश्यक है?

उत्तर- चूंकि संतुलित पशु आहार में भी खनिज मिश्रण होता है। अत: पशु आहार की उपयुक्त मात्रा के साथ हम खनिज मिश्रण की सुझाई गई मात्रा को आधा कर सकते हैं।

प्रश्न- यदि पशु यूरिया मोलासिस ब्लॉक को नहीं चाटता है तो क्या करना चाहिये?

उत्तर- पशु को ब्लॉक चाटने की आदत डालने के लिये शुरु में दो-चार दिन ब्लॉक पर चुटकी से आटा, चोकर या पशु आहार छिड़के। पशु को धीरे-धीरे आदत पड़ जाएगी।

प्रश्न- एक यूरिया मोलासिस ब्लॉक पशु चाट कर कितने दिन में खत्म कर देता है?

उत्तर- एक ब्लॉक तीन किलो का होता है जिसे एक पशु औसतन 5-7 दिन में पूरा चाट लेता है।

इस वर्षा में सब्जियाँ लगाएं

कद्दू

प्रमुख किस्में : अर्का चंदन, पूसा विश्वास, अर्का सूर्यमुखी, लार्ज-रेड, सीओ 2.

बीज की मात्रा : 5-6 किलोग्राम प्रति हे.

बोने का समय : जून-जुलाई

बीज रोपण विधि : कद्दू का बीज थाला बनाकर बोनी करते हैं, थाले का आकार 30X30X30 से.मी. (गहरा, लम्बा, चौड़ा) आकार का गड्ढा तैयार कर उसमें गोबर की खाद, स्फुर तथा पोटाश मिट्टी में मिलाकर भर देते हैं तथा प्रत्येक तैयार गड्ढे में तीन-चार बीज बोएं. अंकुरण पश्चात दो स्वस्थ पौधे छोड़कर बाकी पौधों को उखाड़ देना चाहिए. पालीथिन की थैलियों एवं पत्तों के दोने में भी बीज से पौधे तैयार कर पौधों का रोपण कर सकते हैं. इस विधि से समय की बचत की जाती है और शीघ्र फसल प्राप्त कर सकते हैं.

खाद एवं उर्वरक : 200 क्विंटल गोबर की खाद, 260 किलो यूरिया, 360 किलो सिंगल सुपर फास्फेट तथा 100 किलो म्यूरेट आफ पोटाश प्रति हेक्टर डालें.

विशेष : जब पौधे की 2-4 पत्तियां हो जाएं तब 250 पीपीएम (250 मि.ग्रा./ली. पानी के मान से) एथ्रेल का घोल छिड़कने से मादा पुष्पों की संख्या बढ़ती है एवं उपज बढ़ती है.

लौकी

प्रमुख किस्में : पूसा मेघदूत, पूसा मंजरी, कन्नौजी लांग एवं पूसा हायब्रिड 3.

बीज की मात्रा : 5 किलो प्रति हेक्टेयर.

बीजोपचार : बीज बोने के पूर्व डायथेन एम 45, (3 ग्रा. प्रति किलो बीज) के हिसाब से करें.

बोने का समय : 25 जून से 10 जुलाई.

कतार एवं पौध की दूरी : 2X2 मीटर.

खाद एवं उर्वरक : गोबर की खाद 200 क्विं., यूरिया 260 किलो, सिंगल सुपर फास्फेट 360 किलो तथा पोटाश 100 किलो प्रति हेक्टेयर.

गिलकी

किस्में : पूसा चिकनी, पूसा नसदार, पूसा सुप्रिया, पंजाब सदाबहार, रेखा, जया, हरिता, नागेश्वर.

बीज की मात्रा : 4-5 किलो प्रति हेक्टेयर.

बीजोपचार : डायथेन एम 45 (3 ग्राम प्रति किलो).

बोने का समय : जून-जुलाई.

खाद उर्वरक : गोबर की खाद 200 क्विं., यूरिया 260 किलो, सिंगल सुपर फास्फेट 360 किलो तथा म्यूरेट आफ पोटाश 100 किलो प्रति हेक्टेयर.

इस सप्ताह किसान भाई क्या करें

- अल्पवर्षा की स्थिति में भूमि में पर्याप्त नमी न होने पर बुआई ना की जाये.
- सतत बखर चलाते रहने से भूमि के अंदर की नमी का ह्रास नहीं हो पाता है.
- मेढ़ों पर अरहर तथा अरंडी की बुआई करें.
- रामतिल की बुआई नमी परीक्षण के बाद करें.
- प्याज की रोपाई मुख्य खेत में करें. कद्दूवर्गीय फसलों की बुआई करें.
- पशुओं को सीसीपीटी के टीके लगायें.
- दूषित पानी पीने से बचे.
- आसपास गड्डों में जमे पानी को हटायें ताकि मच्छरों के विस्तार में रुकावट हो सके.

जैविक खेती

वर्मीवाश बनाने की विधि

प्लास्टिक का एक बड़ा ड्रम लेकर उसके नीचे वाले भाग में छेद करके टोंटी लगायें. ड्रम में सबसे नीचे तीन इंच मोटी बोल्डर की परत लगायें. इसके ऊपर तीन इंच बालू रेत की परत लगायें. इसका उपयोग फिल्टर के रूप में होता हैं. इसके पश्चात ड्रम के तीन चौथाई भाग में जैविक पदार्थ जैसे गोबर एवं मुलायम कूड़ा-करकट भरकर उसमें कम से कम 1000 केंचुए छोड़ दें. तत्पश्चात प्रतिदिन आधा से एक लीटर या आवश्यकतानुसार पानी का छिड़काव करते रहे जिससे केंचुए के शरीर से निकला हुआ द्रव इस पानी में घुलकर छनता हुआ ड्रम के तले में पहुंच जाता हैं जहां टोटी खोलकर उसे एक बर्तन में एकत्रित कर लिया जाता हैं आवश्यकतानुसार केंचुओं के लिए खाद्य पदार्थ जैसे गोबर या गोबर गैस स्लरी इत्यादि डालते रहें. जब खाद तैयार हो जाए तब खाद को निकालकर अलग कर लें एवं पुन: उसी प्रक्रिया से ड्रम भर देवें. इस प्रक्रिया में प्रतिदिन लगभग आधा लीटर वर्मीवाश प्राप्त होता है.

वर्मी वाश उपयोग की विधि :

अन्य टानिक की तरह वर्मीवाश 50-100 मि.ली. प्रति 15 लीटर पानी में घोल बनाकर, पंप में डालकर रोगग्रस्त पौधों पर ठंडे समय में छिड़काव करने से पौधे स्वस्थ होकर बढ़वार करने लगते हैं.

फसलों के लिये जैविक टॉनिक (शक्तिवर्धक) : बॉयोगैस स्लरी :- दो लीटर बॉयोगैस स्लरी को छानकर 15 लीटर पानी में घोलकर फसलों पर छिड़काव करने से फसलों में हरापन आता हैं एवं प्रबलतम वृद्धि होती हैं क्योंकि स्लरी के पानी में कई प्रकार के घुलनशील पोषक तत्व एवं वृद्धि नियामक भी होते हैं जो पौधों को छिड़काव द्वारा सीधे प्राप्त हो जाते हैं.

वायवडिंग पाउडर :- एक किलो वायवडिंग पाउडर दस लीटर गोमूत्र में रात भर भिगोएं. इसके बाद छानकर एक लीटर पानी में घोल कर फसल पर छिड़काव करने से फूल-फलन बढ़ता है तथा उपज में वृद्धि होती है.

वर्मीवाश क्या है:- केंचुए अपने शरीर से पीले रंग का कोलमीक नामक द्रव का स्त्राव करता हैं. इस द्रव में बुरशी नामक तत्व पाया जाता हैं. जिसके उपयोग से पौधों में रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती हैं एवं पौधा स्वस्थ बना रहता हैं. साथ ही वर्मीवाश में बहुत से वृद्धि नियामक आक्सीन, सायटोकिनिन इत्यादि होते हैं जो पौधों की बढ़वार में सहायक होते हैं एवं पौधे को बीमारग्रस्त होने पर उसे बीमारी से बाहर लाने में मदद करते हैं. वर्मीवाश में कीटनाशक गुण होता है जो पौधों को कीड़ों से होने वाली हानि से बचाता हैं.

अमृत संजीवनी नुस्खा:-

सामग्री - 200 लीटर क्षमता का खाली ड्रम, 60 किलो गाय, बैल, बछड़े, बछिया का गोबर, 3 किलो यूरिया, 3 किलो म्युरेट ऑफ पोटाश व 2 किलो मूंगफली की खली.

बनाने की विधि : ड्रम में 60 किलो गोबर डालकर उसे 2/3 हिस्से तक पानी डालकर उसमें उपरोक्त मात्रा अनुसार उर्वरक एवं खली डालकर ड्रम को पानी से भर दें. मिश्रण को लकड़ी से अच्छी तरह हिलाकर 48 घंटे के लिये ढक्कन बंद करके रख दें.

उपयोग का तरीका व समय : 2 लीटर मिश्रण को 13 लीटर पानी में घोलकर बिना नोजल वाली स्प्रे टंकी में भरकर फसल पर छिड़काव करें.

सावधानी : इसका छिड़काव सुबह-शाम को ही करना चाहिए.

मटका खाद - नीमच गौशाला विधि

इस विधि से मटका खाद बनाने हेतु देशी गाय का 15 किलो ताजा गोबर तथा 15 लीटर ताजा गोमूत्र एवं 15 लीटर पानी को एक मटके में डालकर अच्छी तरह घोल बना लें. इस घोल में 250 ग्राम गुड़ भी मिला दें. इस मटके पर मिट्टी का ढक्कन लगाकर उसे कपड़े से मुंह को बंद कर दें. 4-5 दिन फसल पर छिड़काव करें. कम अवधि की फसल पर 1 दिन के अंतर से दो बार एवं लंबी अवधि की फसलों पर 4-5 बार छिड़काव करने से उपज में वृद्धि होती है.

विभाग की अनुदान योजनाओं का लाभ लेने के लिए अपने क्षेत्र के ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारी से सम्पर्क करें.